NJESR/Febuary2023/Volume5/Issue2 E-ISSN-2582-5836

DOI-10.53571/NJESR/2023.5.1-6

आत्म निर्भर भारत :कुटीर उद्योगों का योगदान

संतोष कुमार दवाडे

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,खरगोन

जिला-खरगोन (म.प्र.) पिन-451001

(Recevd:27December 2022/Receved:06January 2023/Accepted:17January 2023/Published:04Febuary2023)

शोध सार

यह एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है की आवश्यकता आविष्कार की जननी है।इसी प्रकार आपदा को अवसर में बदलने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत का अवाहन किया। कोविड-19 महामारी संकट को अवसर में बदलने में आत्मनिर्भर भारत अभियान निश्चित रूप से एक महत्व पूर्ण भूमिका निभायेगा तथा आधुनिक भारत की पहचान बनेगा। कोरोना महामारी के दौरान भारतीय लोगों के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत आवश्यक था। आत्मनिर्भर भारत ना केवल एक शब्द है बल्कि यह हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूर दृष्टि पर आधारित एक पहल है।भारत अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दुनिया भर के कई देशों पर निर्भर है निर्यात ओं की तुलना में बड़े आयात बिल का भुगतान करता है महामारी के समय दुनिया भर में सभी आयात और निर्यात गतिविधियां रुक गई थी वस्तुओं के परिवहन परिवहन के साधन बंद होने के कारण व्यापार रुक गया था ऐसे में संसाधनों के बिना जीना बहुत मुश्किल था इसलिए आवश्यक वस्तुओं का स्थानीय बाजारों में उत्पादन करना अनिवार्य हो गया।इसमेंकुटीर उद्योगमहत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कीवर्ड्स_ आत्मनिर्भर, कुटीर उद्योग,स्थानीयउद्योग,अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना

सरल शब्दों में आत्मनिर्भरता का अर्थ है, स्वयं पर निर्भर होना यानी खुद को किसी और पर आश्रित ना करना। महात्मा गांधी जी का सपना था कि भारत आत्मनिर्भर बने स्वदेशी अपनाओ देश

बचाओ। हमारे देश के प्रधानमंत्री ने भी भारत को आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रेरित किया है। आत्मनिर्भर भारत का मतलब है कि भारत को आत्मनिर्भर बनाना है। अर्थात भारत में जिस वस्तु की जरूरत हो उसका उत्पादन भारत में हो और इसके लिए हमें किसी अन्य देश पर निर्भर न रहना पड़े। स्थानीय स्तर पर सभी अनिवार्य वस्तुओं का उत्पादन शुरू करके भारत और भारतीयों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु देश के प्रधानमंत्री जी ने पहल की है।हमारे देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी ने भी भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु मजबूत निर्णय लिया और आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना की शुरुआत 1 अक्टूबर 2020 से वोकल फॉर लोकल का नारा देकर की।

वर्तमान समय में आत्मनिर्भर भारत की प्रासंगिकता

आत्मनिर्भरता एक सोच है। यह सब में आना चाहिए और समय की मांग है।हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हमे स्वयं आत्मनिर्भर वसंपन्न बनना है।गांधीजी ने हमेशा स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया।गांधीजी का मॉडल अपनाने से भारत आत्मनिर्भर हो सकता हैं।वोकल फॉर लोकल के जरिए देश की जनता से स्थानीय बाजारों को जरूरत की वस्तुएं खरीदने के लिए प्रेरित करना हैं।आत्मनिर्भर भारत की सफलता युवा जनशक्ति के आकांक्षाओं पर निर्भर करती है।आत्मनिर्भर भारत पाँच स्तंभों पर खड़ा होगा:

अर्थव्यवस्था :

जो वृद्धिशील परिवर्तन (Incremental Change) के स्थान पर बड़ी उछाल (Quantum Jump) पर आधारित हो।

अवसंरचना :

ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत की पहचान बने।

प्रौद्योगिकी :

21 वीं सदी प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित प्रणाली।

गतिशील जनसांख्यिकी :

जो आत्मनिर्भर भारत के लिये ऊर्जा का स्रोत है।

मांग :

भारत की मांग और आपूर्ति श्रृंखला की पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिये।

कुटीर उद्योगों का योगदान

लघु तथा कुटीर उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। सन् 2019 के आकडो के मुताबिक देश में 6 करोड़ 34 लाख छोटे व कुटीर उद्योग है, जिनमें 11 करोड से भी ज्यादा लोगो को रोजगार मिला हुआ है, भारत की जीडीपी में इनका लगभग 20 प्रतिशत योगदान है। आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करने में महत्वपूर्णभूमिकानिभा सकते हैं।वर्तमान समय में बेरोजगारी बहुत बड़ा संकट बन कर सामने खड़ीहै, जो कि अर्थव्यवस्था पर एक नकारात्मक प्रभाव डालतीहै। कुटीर उद्योग इस समस्या को हल करने के लिए एक महत्वपूर्ण समाधान हो सकते हैं।आधुनिक भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रत्येक भारतीय को दृढ़ संकल्प लेना होगा। हमें नौकरी लेने वाला नहीं नौकरी देने वाला बनना होगा। ये संभव हो सकता है सिर्फ और सिर्फ कुटीर उद्योगों के विकास से।विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में जहां पर बेरोजगारी की वजह से कई क्षेत्रों में पलायनवाद की समस्या भी जन्म लेती है। उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले में रोजगार संकट की वजह से जिले के अधिकतर लोग रोजगार की तलाश में पड़ोसी राज्य गुजरात में पलायन कर जाते हैं। पलायनवाद उक्त जिले की एक बड़ी समस्या है। इससे निजात पाने में भी कुटीर उद्योग सहायता कर सकते हैं। कई ऐसे उद्योग हैं जो अपनाकर युवा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।कुटीर उद्योग में उत्पादनकर्ता अपनी पूँजी लगाता है अपना श्रम करता है तथा उत्पाद का स्वयं अधिकारी होता है। ये उन उद्योगों को कहा जाता है। जिसमें कुशल व्यक्ति वस्तु का उत्पादन अपने घर में ही करता है। भारत में प्राचीन काल से हीं यह प्रथा चली आ रही है। अंग्रेजों के आने के बाद लोग कारखानों की नौकरियों की तरफ आकर्षित हुए और कुटीर उद्योगों का तेजी से विनाश हुआ। किन्तु पिछले कुछ दिनों में स्वदेशी की ओर बढ़ते आकर्षण ने पुनः कुटीर उद्योगों को बल प्रदान किया है। अब इसमें छोटे पैमाने पर मशीनों को भी उपयोग में लाया जाने लगा है। जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई है, साथ ही दूसरों को भी रोजगार प्रदान कर सकते हैं। विभिन्न क्षेत्रों की आर्थिक सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार लघु एवं कुटीर उद्योगों को स्थापित कर हम प्रगति कर सकते हैं।कुटीर और लघु उद्योगों के विकास से राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती हैं औरअधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलता है, जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है, और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि होती हजब हम इतिहास पर नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का गौरवशाली इतिहास रहा है एवं जो भारतीय संस्कृति हज़ारों सालों से सम्पन्न रही है, उसका पालन करते हुए ही उस समय पर अर्थव्यवस्था चलाई जाती थी। भारत को उस समय सोने की चिड़िया कहा जाता था। वैश्विक व्यापार एवं निर्यात में भारत का वर्चस्व था। पिछले लगभग 5000 सालों के बीच में ज़्यादातर समय भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा है। उस समय भारत में कृषि क्षेत्र में उत्पादकता अपने चरम पर थी। मौर्य शासन

काल, चोल शासन काल, चालुक्य शासन काल, अहोम राजवंश, पल्लव शासन काल, पाण्ड्य शासन काल, गुप्त शासन काल, हर्ष शासन काल, मराठा शासन काल,मुगलकाल आदिशासन कालों में भारत आर्थिक दृष्टि से बहुत ही सम्पन्न देश रहा है। धार्मिक नगर- प्रयाग राज, बनारस, पुरी, नासिक, आदि जो नदियों के आसपास बसे हुए थे, वे उस समय पर व्यापार एवं व्यवसाय की दृष्टि से बहुत सम्पन्न नगर थे। वर्ष 1700 में भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था में 25 प्रतिशत का हिस्सा था। इसी प्रकार, वर्ष 1850 तक भारत का विनिर्माण के क्षेत्र में भी विश्व में कुल विनिर्माण का 25 प्रतिशत हिस्सा था। भारत में ब्रिटिश एंपायर के आने के बाद (ईस्ट इंडिया कम्पनी- 1764 से 1857 तक एवं उसके बाद ब्रिटिश राज- 1858 से 1947 तक) विनिर्माण का कार्य भारत से ब्रिटेन एवं अन्य यूरोपीयन देशों की ओर स्थानांतरित किया गया और विनिर्माण के क्षेत्र में भारत का हिस्सा वैश्विक स्तर पर घटता चला गया। देश के आर्थिक विकास को केवल सकल घरेलू उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय से नहीं आँका जा सकता है बल्कि इसके आकलन में रोज़गार के अवसरों में हो रही वृद्धि एवं नागरिकों में आनंद की मात्रा को भी शामिल किया जाना चाहिए। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास हेतु एक शुद्ध भारतीय मॉडल को विकसित किए जाने की आज एक महती आवश्यकता है। इस भारतीय मॉडल के अंतर्गत ग्रामीण इलाक़ों में निवास कर रहे लोगों को स्वावलंबी बनाया जाना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। गाँव, जिले, प्रांत एवं देश को इसी क्रम में आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। साथ ही, भारतीय मॉडल में ऊर्जा दक्षता, पर्यावरण की अनुकूलता, प्रकृति से साथ तालमेल, विज्ञान का अधिकतम उपयोग, विकेंद्रीकरण को बढ़ावा एवं रोज़गार के नए अवसरों का सृजन, आदि मानदंडो को शामिल करना होगा। सृष्टि ने जो नियम बनाए हैं उनका पालन करते हुए ही देश में आर्थिक विकास होना चाहिए। अतः आज भी देश की संस्कृति, जो इसका प्राण है, को अनदेखा करके यदि आर्थिक रूप से आगे बढ़ेंगे तो केवल शरीर ही आगे बढ़ेगा प्राण तो पीछे ही छूट जाएँगे। इसलिए भारत की जो अस्मिता, उसकी पहिचान है उसे साथ में लेकर ही आगे बढ़ने की ज़रूरत है।

आर्थिक विकास के इस भारतीय मॉडल में कुटीर उद्योग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को गाँव स्तर पर ही चालू करने की ज़रूरत है। इसके चलते इन गावों में निवास करने वाले लोगों को ग्रामीण स्तर पर ही रोज़गार के अवसर उपलब्ध होंगे एवं गावों से लोगों के शहरों की ओर पलायन को रोका जा सकेगा। देश में अमूल डेयरी के सफलता की कहानी का भी एक सफल मॉडल के तौर पर यहाँ उदाहरण दिया जा सकता है। अमूल डेयरी आज 27 लाख लोगों को रोज़गार दे रही है। यह शुद्ध रूप से एक भारतीय मॉडल है। देश में आज एक अमूल डेयरी जैसे संस्थान की नहीं बल्कि इस तरह के हज़ारों संस्थानों की आवश्यकता है।

वास्तव में, कुटीर एवं लघु उद्योंगों के सामने सबसे बड़ी समस्या अपने उत्पाद को बेचने की रहती है। इस समस्या का समाधान करने हेतु एक मॉडल विकसित किया जा सकता है, जिसके अंतर्गत लगभग 100 ग्रामों को शामिल कर एक क्लस्टर (इकाई) का गठन किया जाय। 100 ग्रामों की इस इकाई में कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना की जाय एवं उत्पादित वस्तुओं को इन 100 ग्रामों में सबसे पहिले बेचा जाय। सरपंचो पर यह ज़िम्मेदारी डाली जाय कि वे इस प्रकार का माहौल पैदा करें कि इन ग्रामों में निवास कर रहे नागरिकों द्वारा इन कुटीर एवं लघु उद्योगों में निर्मित वस्तुओं का ही उपयोग किया जाय ताकि इन उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं को आसानी से बेचा जा सके। तात्पर्य यह है कि स्थानीय स्तर पर निर्मित वस्तुओं को स्थानीय स्तर पर ही बेचा जाना चाहिए। ग्रामीण स्तर पर इस प्रकार के उद्योगों में शामिल हो सकते हैं- हर्बल सामान जैसे साबुन, तेल आदि का निर्माण करने वाले उद्योग, चाकलेट का निर्माण करने वाले उद्योग, कुकी और बिस्कुट का निर्माण करने वाले उद्योग, देशी मक्खन, घी व पनीर का निर्माण करने वाले उद्योग, मोमबत्ती तथा अगरबत्ती का निर्माण करने वाले उद्योग, पीने कासोडा का निर्माण करने वाले उद्योग, फलों का गूदा निकालने वाले उद्योग, डिसपोज़ेबल कप-प्लेट का निर्माण करने वाले उद्योग, टोकरी का निर्माण करने वाले उद्योग, कपड़े व चमड़े के बैग का निर्माण करने वाले उद्योग, मुर्गी पालन उद्योग, मछली पालन उद्योग, पशु पालन उद्योग आदि इस तरह के सैंकड़ों प्रकार के लघु स्तर के उद्योग हो सकते है, जिनकी स्थापना ग्रामीण स्तर पर की जा सकती है। इस तरह के उद्योगों में अधिक राशि के निवेश की आवश्यकता भी नहीं होती है, एवं घर के सदस्य ही मिलकर इस कार्य को आसानी सम्पादित कर सकते हैं। परंतुउन 100 ग्रामों की इकाई में निवास कर रहे समस्त नागरिकों को उनके आसपास इन कुटीर एवं लघु उद्योग इकाईयों द्वारा निर्मित की जा रही वस्तुओं के उपयोग को प्राथमिकता ज़रूर देनी होगी। इससे इन उद्योगों की एक सबसे बड़ी समस्या अर्थात उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को बेचने सम्बंधी समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकेगा। देश में स्थापित की जाने वाली 100 ग्रामों की इकाईयों की आपस में प्रतिस्पर्धा भी करायी जा सकती है जिससे इन इकाइयों में अधिक से अधिक कुटीर एवं लघु उद्योग स्थापित किए जा सकें एवं अधिक से अधिक रोज़गार के अवसर निर्मित किए जा सकें। इन दोनों क्षेत्रों में राज्यवार सबसे अधिक अच्छा कार्य करने वाली इकाईयों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्रदान किए जा सकते हैं। इस मॉडल की सफलता सरपंचों एवं इन ग्रामों में निवास कर रहे निवासियों की भागीदारी पर अधिक निर्भर रहेगी।

आज जब भारत को आत्म निर्भर बनाने की बात की जा रही है तो सबसे पहिले तो हमें चीन पर अपनी निर्भरता को लगभग समाप्त करना होगा। इसके लिए भारतीय नागरिकों भी अपनी सोच में गुणात्मक परिवर्तन लाना होगा एवं चीन के निम्न गुणवत्ता वाले सामान को केवल इसलिए ख़रीदना

क्योंकि यह सस्ता है, इस प्रकार की सोच में आमूलचूल परिवर्तन लाना होगा। भारत और केवल भारत में निर्मित सामान, चाहे वह थोड़ा महँगा ही क्यों न हो, को ही उपयोग में लाना होगा, ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता की ओर तेज़ी से आगे बढ़ाया जा सके एवं रोज़गार के अधिक से अधिक अवसर भारत में ही उत्पन्न होने लगें। स्थानीय उत्पादों को आगे बढ़ाने की भी हम सभी भारतीयों की ज़िम्मेदारी है। स्थानीय उत्पादों को हमें ही अब वैश्विक स्तर पर ले जाना होगा। आज हर भारतवासी को अपने स्थानीय उत्पाद के लिए वोकल बनने की ज़रूरत है। अर्थात्, न केवल स्थानीय उत्पाद ख़रीदने हैं बल्कि उनका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गर्व से प्रचार प्रसार करना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भरता ही इस देश को गरीबी से छुटकारा दिलाएगी। हम सैकड़ों और सामानों का चाहे वो औद्योगिक हों या कृषि से जुड़े, अपने यहां उत्पादन कर सकते हैं। इनसे बड़े पैमाने पर रोजगार बढ़ेगा और लोगों की आय भी बढ़ेगी। आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत 20 लाख करोड़ के पैकेज दिए गए हैं ताकि खेती ही नहीं छोटे उद्योगों को भी सहारा मिले। अगर हम इस पैसे का सही उपयोग कर पाते हैं और किसानों तथा उद्यमियों की मदद कर पाते हैं तो कोई कारण नहीं है कि करोड़ों लोगों को रोजगार मिलेगा और देश की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी।आत्मनिर्भर भारत अभियान ने भारत में विभिन्न नवाचारों और नए उत्पादों के विकास को बढ़ावा दिया है।इसके परिणाम स्वरूप भारत का आयात घटेगा तथा निर्यात बढ़ेगाऔर हमारा व्यापार घाटा कम होगा।निर्यात प्रोत्साहन से हमेंविदेशी मुद्रा बचाने और अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने में मदद मिलेगी।आत्मनिर्भर भारत पैकेज से भारतीय लघु और मध्यम उद्योगों को बढ़ाने में मदद मिलेगी और विनिर्माण क्षेत्र में उन्नति होगी। यह कार्यक्रम भारत सरकार की 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगा।

सन्दर्भ

1. श्रीवास्तव डॉ.मोहन प्रसाद (2013), आर्थिक विकासकेतत्व, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
2. सिन्हाडॉ. वी. सी. (2019), भारतीय अर्थव्यवस्था,एस. बी. डी. पी.पब्लिकेशन,आगरा
3. गुरुमूर्ति एस.,गुप्ताअरविंद (2021),आत्मनिर्भरभारत,आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, दिल्ली
4. मिश्र जी. एस. पी.(1983),प्राचीन भारतीय समाज एवंअर्थव्यवस्था,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर
5. https://www.prabhasakshi.com/politics-articles/everyone-must-take-the-responsibility-to-promote-local-products